International Referred Reseach Journal, February.2011, ISSN-0975-3486 RNI: RAJBIL 2009/300097 VOL-I *ISSUE 17

शोध पत्र- चित्रकला

इन्दौर राजबाडा के भित्त चित्रों की संरचना

* डॉ. साधना चौहान

* सहा. प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार

February 2011

प्राचीन समय से लेकर वर्तमान तक भित्तिचित्रण प्रणाली हमारे देश में चली आ रही है। इसके प्राचीन स्वरूप को देखे तो अजंता के भित्तिचित्रों की संरचना में गुफाओं की कठोर छाती को छैनी, हथौड़ी के माध्यम से खुरदुरा मगर समतल धरातल बनाया जाता था, उस धरातल पर गारे की जिसमें (बजरी, भूसी, उड़द की दाल का पानी एवं मिट्टी) आदि द्वारा 1 से 1.5 इंच मोटी गच उस दीवार पर तैयार की जाती थी तथा धरातल को समतल चिकना बनाया जाता था, धरातल को सफेद बनाने के लिये अंडे की सफेदी का प्रयोग किया जाता था और उसके पश्चात उनपर चित्रों का निर्माण किया जाता था। ठीक इसी तरह राजबाड़ा भित्तिचित्रों की संरचना तकनीकी दृष्टि से पूर्व प्रचलित भित्ति चित्रण परम्परा के अनुरूप हैं। मारवाड़ म्यूरल्स कोटा, बूंदी के भित्ति चित्र तथा होलकरो के प्राचीन राजमहल चांदवड़ पैलेस से प्राप्त भित्तिचित्र लगभग समान तकनीक में निर्मित है।

इनके निर्माण के लिये सर्वप्रथम दीवारों को खुरदरा मगर समतल बनाने के पश्चात् बज्रलेप पद्धति से तैयार किये गये लाईम प्लास्टर तैयार करने के लिये चूने को पानी में गलाकर बार–बार छानकर तथा दही मिश्रित कर निर्मित किया जाता था तत्पश्चात यदि चित्रों को रेखांकित करके बनाया जाता था तो उन्हें इंचित पद्धति से रेखांकन किया जाता था, दूसरे माध्यम से हल्के गीले प्लास्टर के उपर धरातल को एक रंग से रंग दिया जाता था।परिणामतः प्लास्टर के ऊपरी कण रंगों को सोखकर एक दिल हो जाते थे। 1

1.साक्षात्कार द्वारा – एवं अवलोकन द्वारा और रंग की तेजी समाप्त होकर शांत रंग संयोजना का आभास देने लगते थे। इसके पश्चात काले रंग के रेखांकन द्वारा आ.तियां निर्मित की जाती थी और धरातल के रंग को दबाकर या उभारकर शरीर के अवयव, अलंकरण तथा वस्त्राभूषण आदि बनाये जाते थे। यही कारण है कि कभी–कभी इन चित्रों में वाश टेकनीक का भ्रम उत्पन्न हो जाता है। यह तकनीक राजाबाड़ा के भित्तिचित्रों पर भी अपनाई गई थी और धरातल को मालवा शैली के अनुरूप इंडियन रेड एवं हिड़मयी से रंगा गया था।

संक्रमण काल के चित्र रेखांकन की दृष्टि से कुछ भद्दे अवश्य होते थे इसे छुपाने के लिये अनेक स्थानों पर कलाकरों द्वारा किसी पुराने चित्र की बनी स्टेन्सील को प्रयोग में लाते थे। तैल चित्रों में तैलीय प्रभाव अधिक होने से वे गीलेपन का आभास थे इससे यह स्पष्ट है कि जिसे धरातल पर तैल चित्र बनाये गये थे उसे चित्रण से पूर्व भी तैल पिलाया गया था। कुछ चित्रों को उभार दने के लिये तूलिका से रंग की गई परतें चढ़ाई गयी थी।

राजबाड़ा के कुछ भित्तिचित्र दिवस के सामान्य धरातल पर भी चित्रित किये गये थे और इन चित्रों को रामरज से पोतकर उसके ऊपर चित्र बनाये गये थे समवतः ये चित्र किसी उत्सव विशेष के अवसर पर बिना किसी पूर्व योजना के बनाये गये होंगे। निश्चित रूप से ऐसे चित्रों का चितेरा स्थानीय कलाकार रहा होगा।1राजबाड़ा भित्तिचित्रों को राजकीय संरक्षण प्राप्त चित्रकारों से स्थायी और अंतरंग कक्षों में ही चित्रण करवाया गया होगा।

1. अवलोकन द्वारा – स्वयं राजबाड़े में रामरज से बने धरातल पर चित्र मार्तण्ड मंदिर के नंददीप कक्ष में बने हुए थे। इनके विषय–वस्तु गणेश, ऋषि–सिद्धी, लक्ष्मी, सरस्वती, मयूर तोते आदि तक सीमित थी। रंगों का निर्माण स्वयं कलाकारों द्वारा रंगों को मिलाकर या घोटकर किया जाता था। सुनहरे एवं रूपहले रंगों के लिये चांदी एवं सोने के वर्क को गोंद में मिलाकर या सरस के साथ घोंटकर तैयार किया जाता था। फलस्वरूप वर्षों बाद भी इन सुनहरे एवं रूपहले रंगों की चमक कम नहीं हुई थी। विभिन्न रंगों का निर्माण प्राकृतिक पदार्थों से कलाकारों ने स्वयं किया जैसा कि प्राचीन भित्ति चित्रों में प्राकृतिक रंगों एवं खनिज रंगों का उपयोग किया गया था और वे समस्त रंग स्वयं कलाकारों के द्वारा ही बनाये जाते थे।

राजबाड़ा के चित्रों में सिंदूरी रंग का उपयोग बड़ी ही मात्रा में किया गया था। मंदिर के कक्षों में निर्मित चित्र प्रायः हल्दी के रंग के थे, क्योकिं मल्हारी मार्तण्ड की पूजा के पूजा के समय हल्दी उड़ाते हुए कार्यक्रम सम्पन्न होते थे। 1 पीले रंग के साथ आयोजन भी आकर्षक बन जाता था। मंदिर के कर्मचारी भी हल्दी से रंगे हुए पीले वस्त्र धारण करते थे। पूजे जाने वाले चित्रों पर भी हल्दी के टीके लगाये जाते थे एवं चित्रों के आस–पास शुभ सूचक पंचांग, गुलांग लगाये जाते थे। द्वारा की चौखटों पर हल्दी मिश्रित त्रिपुंड लेपित किया जाता था। 1. साक्षात्कार द्वारा – श्री आर.एस.गर्ग

इस प्रकार हल्दी के रंगों की विविधता एवं बाहुल्यता राजबाड़ा

के भित्तिचित्रों की विशेषता रही है। राजबाड़ा के भित्ति चित्रों में इचिंग के नमूने बहुत ही कम मिलते हैं।राजबाड़ा के हस्तीदंत कला कक्ष में धरातल को लाईम प्लास्टर के साथ संजरात पत्थर के चूर्ण से चिकना किया गया एवं उस पर खोपरा एवं शंखचूर्ण घिसकर लगाया गया था तथा हल्के गीले प्लास्टर को कौड़ियों से घिसकर चिकना किया गया था। इस श्वेत शुभ्र ध रातल पर चटकीले रंगों से जैसे लाल, सिंदुरी पीला नीला आदि से बने हुए चित्र मीनाकारी जैसे प्रतीत होते थे।कक्षों में चित्रों को अलग–अलग समय पर अलग–अलग परिवेश में देखने के लिये खिड़कियों दरवाजों में सतरंगे कांच लगाये गये थे। उनसे छनकर आनेवाली रोशनी इन चित्रों पर पड़ती थी,जिससे चित्रकला (भित्तिचित्रण) का वातावरण रोमांचित हो उठता था एवं फर्श पर पड़ने वाली रोशनी (सतरंगी आभा) ऊपर उठकर सिलिंग में लगे दर्पण पर बने हुए चित्रों को सजीव कर देते थे। 1

यूं देखा जाये तो राजबाड़ा के चित्र प्रदर्शन की तकनीक से भी युक्त थे। इस प्रकार कृत्रिम प्रभाव के माध्यम से भी चित्रों को उभारने का प्रयास राजबाड़ा इन्दौर के भित्तिचित्रों में उपलब्ध था।

1.साक्षात्कार द्वारा – प्रमोद पाण्डेय इस प्रकार राजबाड़ा के भित्तिचित्रों के सूक्ष्म अवलोकन से, साक्षात्कार से यह निष्कर्ष निकलता है, कि इन भित्ति चित्रों एवं कोटा, बूंदी की संरचना प्राचीन समय के अजंता भित्तिचित्रों एवं कोटा, बूंदी मारवाड़ा आदि शैली एवं मालवाशैली आदि के अनुरूप थी। उसी प्रकार से धरातल का निर्माण करना (थोड़ा बहुत फेरबदल) चित्रों का निर्माण, प्राकृतिक रंगों का प्रयोग, तैल रंगों का प्रयोग छायाप्रकाश का प्रयोग, चटकीले रंगों की प्रधानता, काली रेखा के माध्यम से चित्रों का निर्माण करना इत्यादि।

राजबाड़ा भित्तिचित्रों में राजपूत एवं मुगल चित्र के समान ही एक चश्म चेहरे की प्रधानता है एवं चित्रा कृतियों में आभूषणों अलंकरणों से चित्रों को सुसज्जित किया गया है। मुगलकालीन एवं राजस्थानी शैली के समान भित्तिचित्रों के चारों ओर लगभग दो ढाई इंच के अनुपात में सजावट पूर्ण हाशिये चित्रित किये गये हैं, जिसे भित्तिचित्रों में और भी निखार दृष्टि गोचर होता है।राजबाड़ा भित्तिचित्रों में विषय से संबंधित आधार धार्मिक चित्रों की बाहुल्यता है, जैसे रामायण, महाभारत, विभिन्न धार्मिक प्रसंगों आदि एवं नायिकाओं का चित्रण भी राजबाड़ा भित्तिचित्रों में देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त भक्ति संबंधी, राग–रागिनियों का चित्रण भी प्रमुख है।इस प्रकार देखा जाय तो यह अतिश्योक्ति नहीं है, कि राजबाड़ा के भित्तिचित्र वास्तव में अपने आप में समपूर्ण कला के दर्शन कराते हैं एवं प्राचीन कालीन भित्तिचित्रों की याद ताजा करते हैं।